अध्याय 6

मोर्दकै का प्रतिफल

अध्याय 6 में भी हामान की पतन की कहानी जारी रहती है। लेखक इस पाठ में यह बताता है कि किस प्रकार मोर्दकै ने राजा का जीवन बचाया था और इसलिए उसने उसको सम्मानित करने का निर्णय लिया। राजा की अनिद्र रात और एक अनिष्ट कृपा के बारे में खोज करना और राजा और हामान के बीच एक असामान्य मुठभेड़ जिसने हामान को नीचा किया और मोर्दकै को सम्मानित किया।

राजा द्वारा मोर्दकै को सम्मानित किया जाना (6:1-11)

1उस रात राजा को नींद नहीं आई, इसलिये उसकी आज्ञा से इतिहास की पुस्तक लाई गई, और पढ़कर राजा को सुनाई गई। 2उसमें यह लिखा हुआ मिला, कि जब राजा क्षयर्ष के हाकिम जो द्वारपाल भी थे, उनमें से बिगताना और तेरेश नामक दो जनों ने उस पर हाथ उठाने की युक्ति की थी उसे मोर्दकै ने प्रगट किया था। 3तब राजा ने पूछा, "इसके बदले मोर्दकै की क्या प्रतिष्ठा और बड़ाई की गई?" राजा के जो सेवक उसकी सेवा टहल कर रहे थे, उन्होंने उसको उत्तर दिया, "उसके लिये कुछ भी नहीं किया गया।" 4राजा ने पूछा, "आँगन में कौन है?" उसी समय हामान राजा के भवन से बाहरी आँगन में इस मनसा से आया था कि जो खम्भा उसने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, उस पर उसको लटका देने की चर्चा राजा से करे। 5तब राजा के सेवकों ने उससे कहा, "आँगन में तो हामान खड़ा है।" राजा ने कहा, "उसे भीतर बुलवा लाओ।" 6जब हामान भीतर आया, तब राजा ने उससे पूछा, "जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो तो उसके लिये क्या करना उचित होगा?" हामान ने यह सोचकर, कि मुझ से अधिक राजा किसकी प्रतिष्ठा करना चाहता होगा, 7राजा को उत्तर दिया, "जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे, 8उसके लिये राजकीय वस्त्र लाया जाए, जो राजा पहिनता है, और एक घोड़ा भी, जिस पर राजा सवार होता है, और उसके सिर पर जो राजकीय मुकुट धरा जाता है वह भी लाया जाए। 9फिर वह वस्त्र, और वह घोड़ा राजा के किसी बड़े हाकिम को सौंपा जाए, और जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो, उसको वह वस्त्र पहिनाया जाए, और उस घोड़े पर सवार करके नगर के चौक में उसे फिराया जाए; और उसके आगे आगे यह प्रचार किया जाए, 'जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है, उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा।'" 10राजा ने हामान से कहा, "फुर्ती करके अपने कहने के अनुसार

उस वस्त्र और उस घोड़े को लेकर, उस यहूदी मोर्दकै से जो राजभवन के फाटक में बैठा करता है, वैसा ही कर। जैसा तू ने कहा है उसमें कुछ भी कमी होने न पाए।" 11तब हामान ने उस वस्त्र, और उस घोड़े को लेकर, मोर्दकै को पहिनाया, और उसे घोड़े पर चढ़ाकर, नगर के चौक में इस प्रकार पुकारता हुआ घुमाया, "जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा।"

कहानी के इस भाग का विश्लेषण करने के बजाय, इसको जितना पढ़ा जाए और इसकी जितनी सराहना की जाए उतना कम है। कहानी पढ़ने से पाठकों पर जो प्रभाव पड़ता है वह कहानी की व्याख्या से नहीं हो सकता है। हामान के आत्मसंयम पर कोई भी अपने आपको जोर-जोर से ठहाके मारने से नहीं रोक सकता है। फिर भी, इस कड़ी के कुछ तथ्यों पर विचार किया जाना चाहिए।

आयत 1. उस रात राजा को नींद नहीं आई। इब्रानी पाठ का अक्षरशः अनुवाद यह है कि "राजा की नींद उड़ गई।" उसका अनिद्र एक ऐसा "संयोग" है, जिसको परमेश्वर के यहूदियों के छुटकारे से संयोजित किया जा सकता है।

राजा की **आज्ञा से इतिहास की पुस्तक लाई गई।** अन्य अनुवादों में इतिहास की पुस्तक को "इतिहास की पुस्तक, उसके शासनकाल का ले (NIV); "अभिलेख की पुस्तक, इतिहास" (NRSV); "स्मरणीय घटनाओं का इतिहास" (REB); और "जब से वह राजा बना था तब से जो कुछ घटना घटी थी, उसका अभिलेख" (CEV) अनुवाद किया गया है। 2:23 में इस लेख को "इतिहास की पुस्तक" भी कहा गया है।

राजा का एक सेवक पुस्तक ले आया और यह राजा को **पढ़कर** सुनाई गई। नींद आने का यह सबसे अच्छा तरीका था। कोई भी इस बात का अनुमान लगा सकता है कि ये अभिलेख आमतौर पर नीरस होते थे और इसलिए इसे पढ़कर सुनने से किसी को भी नींद आ सकती थी। यद्यपि इस परिस्थिति में, एक घटना ने क्षयर्ष का ध्यान आकर्षित किया।

आयत 2. एक बार **मोर्दकै** जो एक यहूदी था, द्वारा लाई गई एक सूचना ने राजा के प्राण बचा लिया था। यह अभिलेख नीरस नहीं था; वस्तुतः यह तो उत्तेजित करने वाला था! इसने राजा को सुलाने के बजाय जगा दिया था। इस पुस्तक के एक भाग में यह बताया गया है कि कैसे **जब राजा क्षयर्ष के हाकिम जो द्वारपाल भी थे, उनमें से बिगताना और तेरेश नामक दो जनों ने उस पर हाथ उठाने की युक्ति की थी उसे मोर्दकै ने प्रगट किया था।** जब ऐसा हुआ तो एस्तेर रानी ने राजा को इस संबंध में सूचित किया था और इन दोनों व्यक्तियों की बुरी युक्ति को विफल कर दिया गया था। यह घटना राजा के इतिहास की पुस्तक में लिख दी गई थी (2:21-23), लेकिन वह इसे भूल गया था।

आयत 3. राजा ने प्रतिक्रिया जताते हुए अपने एक सेवक से पूछा कि उसके प्राण बचाने के लिए **मोर्दकै** को इनाम देने के लिए क्या किया गया था। इस बात का यह आशय है कि जो इस प्रकार की सेवा देता है उसको कुछ न कुछ इनाम दिया जाता था। फारसी राजा लोगों को महान और साहसिक कार्य के लिए सम्मानित

करने के लिए प्रख्यात थे।[1] उदाहरण के लिए, "फायलेकस," जिसने फारसी युद्ध के दौरान एक यूनानी जहाज पकड़ा था, का "नाम, राजा के लाभार्थियों के नामों में सूचीबद्ध किया गया था और उसे इनाम के रूप में एक बड़ा राज्य दिया गया था।"[2] यद्यपि फारसी राजा, ऐसी सेवाओं के लिए बड़े इनाम देने के लिए जाने जाते थे लेकिन मोर्दकै के लिए **कुछ भी नहीं किया गया था**।

आयतें 4, 5. आंगन में कुछ आहट सुनने के पश्चात **राजा ने पूछा, आँगन में कौन है? उसी समय हामान राजा के भवन से बाहरी आँगन में इस मनसा से आया था कि जो खम्भा उसने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, उस पर उसको लटका देने की चर्चा राजा से करे।** सेवक ने राजा क्षयर्ष को बताया कि वहाँ हामान है और फिर सेवक को हामान को अंदर राजा के पास बुलाने के लिए कहा गया।

इन घटनाओं का क्रम कुछ पेचीदा है। यदि राजा रात्रि के प्रथम पहर में सो नहीं पा रहा था और यदि हामान भोर से पहले राजभवन में नहीं पहुँचा था (देखें 5:14), तो कैसे राजा, जिसने अभी-अभी इतिहास की पुस्तकों से मोर्दकै के साहसिक कार्य के बारे में जाना, वह उस क्षण जब हामान पहुँचा ही था, सहायता मांग रहा था? इस संबंध में कई दृश्य संभव है। (1) इससे पहले कि आँगन में कौन है पूछने से पहले, हो सकता है कि राजा ने मोर्दकै के कार्य के बारे में रात्रि के प्रथम पहर में ही सुन लिया हो जिसके बारे में वह रात भर सोचता रहा हो। (2) हो सकता है कि वह पूरी रात इतिहास पढ़वाकर सुनता रहा होगा सिवाय उस भाग के जिसमें मोर्दकै के बारे में लिखा था जो उसने सुबह सुना होगा। (3) वह सो सकता था लेकिन जगा हुआ था। जब वह नहीं सो सका तो उसने देर रात से सुबह तक इतिहास की पुस्तक पढ़वाई होगी।

आयत 6. जब हामान अंदर आया तो राजा ने उससे पूछा, जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो तो उसके लिये क्या करना उचित होगा? हामान ने यह सोचकर, कि मुझ से अधिक राजा किसकी प्रतिष्ठा करना चाहता होगा? आत्मकेन्द्रित, स्वयंसेवी हामान ने तुरंत निष्कर्ष निकाला कि राजा उससे उसका आदर करने के लिए क्या करना चाहिए, के बारे में घुमा फिरा कर पूछ रहा है। "आखिरकार" उसने सोचा "मुझसे बढ़कर आदर पाने के योग्य और कौन हो सकता है?"

जॉयस जी. बॉल्डवीन ने सुझाव प्रस्तुत किया कि हामान के इस दोषपूर्ण बोध को एक सीमा तक समझा जा सकता है। उन्होंने यह विश्लेषण प्रस्तुत किया कि एक राजा बहुधा "इनाम प्राप्त करने वालों से पूछता है कि वह इनाम में क्या प्राप्त करना चाहेगा।" ऐसा करने से वह यह सुनिश्चित कर लेता था उसको उचित इनाम मिल चुका है। यद्यपि, मोर्दकै से पूछने के बजाय, राजा ने प्रश्न हामान की ओर निर्देशित किया। "हाँ राजा यह सुनने की अपेक्षा कर रहा था कि उनका दरबारी प्रतिष्ठा के रूप में क्या पाना चाहेगा और शायद कोई भी यह कल्पना करके गलती नहीं कर सकता था कि हामान ही वह व्यक्ति है जिसकी पदोन्नति हो रहा था।"[3]

आयतें 7-9. जब हामान ने उत्तर दिया तो उसमें स्व-महिमा दिखाई देती है। उसने कहा "जिस मनुष्य की प्रतिष्ठा राजा करना चाहे, उसके लिये राजकीय वस्त्र

लाया जाए, जो राजा पहिनता है, और एक घोड़ा भी, जिस पर राजा सवार होता है, और उसके सिर पर जो राजकीय मुकुट धरा जाता है वह भी लाया जाए। फिर वह वस्त्र, और वह घोड़ा राजा के किसी बड़े हाकिम को सौंपा जाए, और जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता हो, उसको वह वस्त्र पहिनाया जाए, और उस घोड़े पर सवार करके नगर के चौक में उसे फिराया जाए; और उसके आगे आगे यह प्रचार किया जाए, "**जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है, उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा।**" ज्योंहि वह राजा के घोड़े पर सवार होता तो वह लगभग अपनी वाह-वाही और प्रशंसनीय शब्द सुन सकता था!

हामान के इस उत्तर की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है मानो वह स्वयं राजगद्दी पर बैठने की अपनी इच्छा जता रहा हो।[4] क्षयर्ष ने हामान के शब्दों से यह निष्कर्ष निकाला होगा कि वह मानो फारस की राजगद्दी का संभावित प्रतिद्वंदी हो। निश्चय, इतिहास के इस समय में, अनगिनत सहसाघात का प्रयास किया गया था (ध्यान दीजिए 2:21-23 में हत्या करने का षड्यंत्र)। एक और विचारधारा यह है कि "हामान यह बताने का प्रयास कर रहा था कि क्षयर्ष ने उसे अपना उत्तराधिकारी चुना है।"[5] फिर भी, पाठ हामान के राजा बनने की संभावना की ओर कोई संकेत नहीं करता है।

आयत 8 के बारे में एक प्रश्न बना हुआ है: किसने **राजकीय मुकुट** पहना था? चूँकि इब्रानी पाठ अस्पष्ट है, तो यह या तो घोड़ा या प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला हो सकता है। एडेल बर्लिन के तर्कानुसार "सर्वोत्तम विश्लेषण यह है कि जब राजा घोड़े की सवारी करता था तो मुकुट घोड़े के सिर पर रखा होता था जो यह संकेत करता था कि स्वयं राजा उस पर सवार था।"[6] पर्सेपोलीस की नक्काशी "फारसी घोड़े को मुकुट" के साथ दर्शाती है।[7]

आयत 10. जब क्षयर्ष राजा ने हामान को **तुरंत यह सब मोर्दकै जो यहूदी था**, के लिए **करने के लिए** कहा तो उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक गई। राजा ने हामान को अपनी कल्पना पूरी करने का आदेश दिया - यह प्रतिष्ठा मोर्दकै को दी जानी थी, जिससे हामान इस दुनिया की किसी भी वस्तु से सबसे अधिक घृणा करता था! संक्षिप्त में कहा जाए तो हामान ने स्तम्भित, परेशान और क्रोधित होकर चुप्पी साध ली गई।

आयत 11. आगे लेखक यह कहता है कि **हामान** ने राजा के निर्देशानुसार किया। उसने **मोर्दकै** को राजा के **घोड़े** पर सवार किया और उसको राजा के **वस्त्र पहनाए**, और **नगर के चौक** में यह कहते हुए घुमाया, **"जिसकी प्रतिष्ठा राजा करना चाहता है उसके साथ ऐसा ही किया जाएगा।"** कैसी दुःखद बात है! हामान को उस व्यक्ति को प्रतिष्ठा देने के लिए कहा गया जिसको उसने फांसी के फंदे चढ़ाने को सोचा था।

हामान का नीचा किया जाना (6:12-14)

[12]तब मोर्दकै तो राजभवन के फाटक में लौट गया परन्तु हामान शोक करता

हुआ और सिर ढाँपे हुए झट अपने घर को गया। 13हामान ने अपनी पत्नी जेरेश और अपने सब मित्रों से सब कुछ जो उस पर बीता था वर्णन किया। तब उसके बुद्धिमान मित्रों और उसकी पत्नी जेरेश ने उससे कहा, "मोर्दकै जिसे तू नीचा दिखाना चाहता है, यदि वह यहूदियों के वंश में का है, तो तू उस पर प्रबल न होने पाएगा उससे पूरी रीति से नीचा ही खाएगा।" 14वे उससे बातें कर ही रहे थे कि राजा के खोजे आकर हामान को एस्तेर के किए हुए भोज में फुर्ती से बुला ले गए।

इस अध्याय की अंतिम तीन आयतें मोर्दकै की नगर के चौक में राजकीय सवारी का परिणाम बताती है।

आयत 12. जब **मोर्दकै** ने राजा द्वारा प्रतिष्ठित किए जाने का आनंद उठा लिया तो उसके पश्चात उसने राजमहल के **फाटक** पर अपना दैनिक कार्य पुनः आरंभ किया। अपमानित **हामान** अपना **सिर ढांके हुए** झट अपने घर गया। **शोक** का यह चिह्न उसके गम्भीर दुःख का अहसास कराता है (देखें 2 शमूएल 15:30; 19:4; यिर्म. 14:3, 4)।

आयत 13. पहले के समान, घर पर **हामान** ने **अपनी पत्नी जेरेश** और **अपने सब मित्रों** का सामना किया। फिर से उसने अपनी भावनाओं को उनके साथ बांटा। यद्यपि, इस बार उसने अपने सारे "धन की महिमा" और उपलब्धियों के बजाय (5:11), **सब कुछ जो उस पर बीता था वर्णन किया**। उसने उन्हें बताया कि किस प्रकार राजा ने उसे उस मोर्दकै जिससे वह घृणा करता है, को सम्मान देने के लिए कहा है। संभवतः उसने अपनी पत्नी और मित्रों से कुछ सांत्वना के शब्द पाने की अपेक्षा की होगी। यदि ऐसा था, तो वह निराश हो गया होगा। उसकी पत्नी और उसके बुद्धिमान मित्रों ने उससे कहा, **"मोर्दकै जिसे तू नीचा दिखाना चाहता है, यदि वह यहूदियों के वंश में का है, तो तू उस पर प्रबल न होने पाएगा उससे पूरी रीति से नीचा ही खाएगा।"**

क्या जेरेश के शब्द, पिलातुस की पत्नी (मत्ती 27:19) के शब्दों के समान भविष्यवाणी के शब्द थे? क्या वह वर्ष के अंत में लागू होने वाली राजाज्ञा से यहूदियों के छुटकारे के बारे में बोल रही थी, जो श्रोताओं को "आने वाली बातों" के लिए तैयार कर रही थी?[8]

पाठ क्यों "बुद्धिमान मित्रों" (חֲכָם, *ह़ाकाम*) का जिक्र करता है? ये तो निश्चय वे सभी व्यक्ति थे जो 5:10, 14 और 6:13 में "उसके मित्र" और "उसके सब मित्र" (या कम से कम उन मित्रों में से थे) करके संबोधित किए गए थे। ऐसा हो सकता है कि ये वे लोग रहे होंगे जो "[हामान] के सभी मित्रों" में से कुछ लोगों का एक छोटा झुण्ड था जो उसके सलाहकार रहे होंगे।

जब वक्ता ने कहा, "यदि मोर्दकै यहूदी वंश का है," तो यह उनके मन में उसकी वंशावली को लेकर प्रश्न नहीं उठाता है। यहाँ "यदि" शब्द का अर्थ अनिश्चितता के संदर्भ में नहीं समझा जाना चाहिए। बल्कि यह तो तथ्य को अभिव्यक्त करने का तरीका था। इसका यह अर्थ हुआ, "चूँकि मोर्दकै एक यहूदी है, तो तू उसका सामना

नहीं कर सकेगा।" यद्यपि फारसियों के मुँह से ये शब्द अच्छे नहीं लगते हैं लेकिन यह इस पुस्तक की मुख्य विषयवस्तु दर्शाता है: यहूदी लोग अजेय थे। उनको नष्ट करने के लिए कोई कितना भी प्रयास क्यों न कर ले, कोई भी उनका सामना नहीं कर सकता है! हामान द्वारा राजाज्ञा का प्रकाशन करने के पश्चात संभवतः वे सबकी आँखों में छा गए थे। हामान के सहयोगियों द्वारा निकाले गए निष्कर्ष के द्वारा लेखक ने यह बात कही: यहूदियों को नष्ट करने का तात्पर्य आत्महत्या करना था।

इस निष्कर्ष के बारे में सबसे विचित्र बात यह है कि "बुद्धिमान लोगों" ने इससे पहले यहूदियों की अजेय अवस्था को नहीं माना था। बल्कि उन्होंने यह सुझाव दिया था कि हामान को मोर्दकै को फांसी के खम्भे पर चढ़ा देना चाहिए था। उनकी बदली विचारधारा का विश्लेषण, बदली हुई परिस्थिति के द्वारा किया जा सकता है। इससे पहले मोर्दकै निर्बल व हामान बलवान लग रहा था। अब परिस्थिति ऐसी हो गई थी कि मोर्दकै अब बलवान हो गया था और हामान उसकी कृपादृष्टि पर निर्भर था। इन लोगों ने इस बदली परिस्थिति को हामान के लिए एक अनिष्टसूचक सम्पूर्ण पराजय के चिह्न के रूप में देखा, जो हामान के लिए "इससे आगे की पराजय का छायांकन था।"[9]

यह घटना प्राचीन फारस के "बुद्धिमान लोग" किस तरह से काम करते थे, का एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है। वे समयों के "चिह्नों" का विश्लेषण किया करते थे: जो भी घटना घटित होती थी, वे हमेशा यह निष्कर्ष निकालते थे कि अगली घटना क्या होगी।

इस समय तक, हामान का **पतन** प्रारंभ हो चुका था। लिंडा डे के अनुसार, "पतन, पूरी कहानी में हामान के पतन से जुड़ा है और इब्रानी क्रिया [נָפַל, *नापाल*] 'गिरना' उसके पूरे वंश से जुड़ा हुआ है।" पासा यहूदियों के विनाश की तिथि निर्धारित करने के लिए "गिरा" (3:7; NIV)। राजा ने हामान से कहा कि मोर्दकै की प्रतिष्ठा करने के लिए जो कुछ उसने कहा है, उसमें कोई कमी न रह जाए (6:10)। हामान की पत्नी और उसके मित्रों ने कहा कि उसका "पतन" प्रारंभ हो चुका है और वह मोर्दकै से पूरी रीति से "नीचा ही खाएगा" (6:13)। अंत में हामान उस चौकी पर गिरा जहाँ एस्तेर बैठी थी (7:8)।[10] उसके इस अंतिम कार्य ने उसके पतन को निर्धारित कर दिया।

आयत 14. हामान के निरंतर पतन की घोषणा के साथ कहानी जारी रहती है, तभी उसी क्षण **राजा के खोजे आकर हामान को एस्तेर के भोज में** ले जाते हैं। बल्कि वे हामान को **फुर्ती** से भोज में ले गए। "राजा के संग आनन्द से जेवनार में" (5:14) जाने के बजाय ऐसा प्रतीत होता है कि हामान दोषारोपित व्यक्ति के समान वध होने के लिए फुर्ती से बलपूर्वक ले जाया गया। कहानी के शब्द हामान की पूर्ण पराजय और अगले अध्याय में उसकी मृत्यु का पूर्वाभास देते हैं। माइकल वी. फॉक्स ने हामान को एस्तेर के नियंत्रण के अंतर्गत गिरते हुए देखा:

> आखिरी कड़ी की निष्क्रियता कि - "खोजे आकर हामान को एस्तेर के किए हुए भोज में फुर्ती से बुला ले गए" - अति महत्वपूर्ण है। राजा की इच्छा और

लोगों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वाले के जीवन का नियंत्रण स्वयं उसके हाथ में नहीं रहा। उसे फुर्ती से उस भोज में ले जाया गया जिसे *एस्तेर* ने तैयार किया था। वह *उसकी* परिक्षेत्र में लाया गया और उसका जीवन अब रानी के हाथ में था।[11]

अनुप्रयोग

जो हमारे लिए किया गया था उसे भूल जाना (6:1-3)

यद्यपि राजा ने उसके जीवन को बचाने से संबंधित मोर्दकै की भूमिका के बारे सुना था (2:21-23), लेकिन वह उसे भूल गया था। परिणामस्वरूप, इस कार्य के लिए जिसको प्रतिष्ठा और सम्मान मिलना चाहिए था, नहीं मिला।

हम राजा को उसके भुलक्कड़पन के लिए दोषी ठहरा सकते हैं, लेकिन इससे पहले हमें अपने आपसे यह पूछना होगा कि क्या हमने भी कभी ऐसा किया है। क्या जो भलाई अन्य लोगों (उदाहरण के लिए हमारा परिवार, कलीसिया, विद्यालय या पड़ोसियों) ने हमारे साथ किया है, उसके लिए हमने उनको धन्यवाद न कहा हो? यह संभव है कि राजा के समान, हमारा जीवन भी किसी माध्यम से किसी के द्वारा बचाया गया होगा, लेकिन हमने हमारे लाभ पहुँचाने वाले के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए कभी भी कुछ न किया हो। मसीही लोगों को आभारी होना चाहिए।

इससे बढ़कर, हमें यह स्मरण रखना होगा कि परमेश्वर ने हमारे लिए क्या-क्या किया है। इस्राएली लोग निरंतर पाप में इसलिए गिरते चले गए क्योंकि वे यह भूल गए थे कि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह के द्वारा उन्हें बंधुआई से छुड़ाया था। संभवतः आज मसीही लोगों का परमेश्वर से भटकने का मुख्य कारण यह है कि वे भी यह भूल जाते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें अपने अनुग्रह के द्वारा पाप की दासता से छुड़ाया है (रोमियों 6:17, 18)।

हमें कुछ चीजें भूल जाना चाहिए (फिलि. 3:13, 14), लेकिन आइए हम अन्य लोगों द्वारा हमारे साथ की गई भलाई को न भूलें। विशेषकर, आइये हम परमेश्वर को स्मरण रखें कि उसके पुत्र यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा उसने हमारे पाप क्षमा कर दिए गए हैं (इब्रा. 10:17)।

इधर-उधर मंडराने वाली प्रतिष्ठा (6:7-9, 12)

हामान की ख्याति प्राप्त करने की अचेतन इच्छा और मोर्दकै का उसकी प्रतिष्ठा के प्रति प्रतिक्रिया के बीच अंतर, किसी के चारों ओर मंडराने वाली प्रतिष्ठा और इसको अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाने की मूर्खता का सुझाव देती है। दूसरों की अधीनता और स्वीकृति के लिए हामान की इच्छा बचकानी थी। जो अंत में उसकी मृत्यु का कारण ठहरी; क्योंकि इसने उसे एक व्यक्ति मोर्दकै के लिए जिसने उसके अधिकार को पहचानने से इनकार कर दिया था, के लोगों को नष्ट करने का षड्यंत्र रचने के लिए विवश किया। दूसरी तरफ, ऐसा प्रतीत होता है कि मोर्दकै ने अपनी

क्षणिक प्रतिष्ठा को नम्रता से स्वीकार किया। जब यह सब कुछ पूरा हुआ तो वह अपने दैनिक कार्य में लग गया, इस अनुभव के कारण न तो उसने कुछ बेहतर और न कुछ बुरा किया।

बहुत से लोग प्रसिद्धि, इज्जत, और प्रतिष्ठा के देवताओं की उपासना करते हैं। अंत में ये मूरतें केवल निराश ही करती हैं। चाहे कोई कितना भी प्रसिद्ध क्यों न हो जाए, यदि प्रसिद्धि उसका ईश्वर है, तो वह कभी प्रसिद्ध नहीं हो सकता है। इससे बढ़कर, प्रसिद्धि केवल मंडराती रहती है। बहुत से ऐसे लोग हुए जिन्होंने कुछ समय के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त तो की, लेकिन जल्दी ही भीड़ उनको भुला देती है। तब वे क्या करते हैं: निराशा में जीवन बिताते हैं, पुरानी बातों को स्मरण करते रहते हैं, उन्होंने कैसे प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, उसकी कामना करते रहते हैं।

जब हम क्षणिक प्रतिष्ठा का अनुभव करते हैं तो हमें क्या करना चाहिए? तब हमें संभवतः मोर्दकै का अनुकरण करना चाहिए। हमें प्रतिष्ठित होने के लिए चिंता नहीं करनी है, बल्कि उस कार्य में लग जाना चाहिए जिसके लिए परमेश्वर ने बुलाया है। हमें परमेश्वर से प्रशंसा की कामना करनी चाहिए न कि मनुष्यों से।

यहूदियों की अपराजेयता (6:13)

6:13 में मोर्दकै का यहूदी वंश का उल्लेख एस्तेर की पुस्तक के शीर्षक का प्रतिपादन करता है - यहूदियों की अपराजेयता। वस्तुतः यही विचारधारा इस पुस्तक का प्राथमिक संदर्भ है। एस्तेर वह पुस्तक है जिसमें परमेश्वर ने यहूदियों को नष्ट होने से कैसे बचाया का वर्णन करता है, लेकिन इसके साथ ही यह इस बात का भी उल्लेख करती है कि परमेश्वर अपने लोगों को नष्ट होने की अनुमति नहीं देता है। चूँकि परमेश्वर उनकी ओर है, वे अजेय थे! हामान के समान उनको पराजय करने के प्रयास का तात्पर्य पराजय को गले लगाना है।

मसीही लोगों को आज इस तथ्य की प्रशंसा करना चाहिए कि परमेश्वर ने अपने लोग इस्राएलियों को न केवल एस्तेर के दिनों में बल्कि पूरे पुराने नियम के दिनों में बचाया। उनके द्वारा परमेश्वर की योजनानुसार यीशु मसीह आया। इस्राएलियों की अपराजेयता का परिणाम ही हमारा उद्धार है।

इससे भी बढ़कर हम परमेश्वर का धन्यवाद करें, क्योंकि वह अपने लोग, कलीसिया की आज भी सुरक्षा करता है। वह सताए जाने से हमें वंचित नहीं रखता है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि कलीसिया नष्ट की गई थी या नष्ट कर दी जाएगी। फिर भी, हम जानते हैं कि अंत में, कलीसिया मसीह की दुल्हन के रूप में अजेय रहेगी। प्रभु की देह के विश्वासयोग्य सदस्य मसीह के साथ उसके सिंहासन पर विराजमान होंगे (प्रका. 3:21)। यद्यपि कुछ लोग विश्वास के कारण मारे जाएंगे, लेकिन अंततः परमेश्वर के लोग आत्मिक रूप से और अनंतकाल के लिए अजेय रहेंगे! इस संदर्भ में हम अपराजेय हैं! पौलुस ने इस सच्चाई को, एक प्रश्न और एक घोषणा के रूप में अभिव्यक्त किया है : "यदि परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?"; "परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोमियों 8:31, 37)।

समाप्ति नोट्स

[1]मार्क मैनगानो, *एस्तेर एण्ड दानिय्येल*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री (जोप्लिन, मिसौरीः कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 89. [2]हेरोडोटस *हिस्ट्रीज* 8.85. उसने फारसी राजाओं द्वारा कुछ अन्य बड़े इनामों की सूची 3.138, 140; 5.11; 9.107 में लिखा है। [3]जॉयस बी. बॉल्डवीन, *एस्तेर*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डॉनर्स ग्रूव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1984), 89-90. [4]उपरोक्त, 90. [5]मैनगानो, 91. में 1 राजा 1:33 में, दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान को अपने घोड़े पर सवारी करने दिया, जिसका यह अर्थ हुआ कि वह इस्राएल का अगला राजा होगा। [6]एडेल बर्लिन, *एस्तेर,* द JPS बाइबल कमेंट्री (फिलाडेलफियाः ज्यूविश पब्लिकेशन सोसाइटी, 2001), 60. [7]केरी ए. मूर, *एस्तेर,* दि एंकर बाइबल, वॉल्यूम 7बी (न्यू यॉर्कः डबलडे & कम्पनी, 1971), 65. [8]रीडार बी. जोनार्ड, "एस्तेर," में *द ब्राडमैन बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 4, *एस्तेर-भजन संहिता* (नैशविलः ब्राडमैन प्रेस, 1971), 15. [9]मूर, 67. [10]लिंडा डे, *एस्तेर*, एबिंगदन ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (नैशविलः अबिंगदन प्रेस, 2005), 113.

[11]माइकल वी. फॉक्स, *केरेक्टर एण्ड आइडियोलोजी इन बुक ऑफ़ एस्तेर*, द्वितीय संस्करण (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 81.